# सम्मेलन-विवरण-पत्रम्

# सीमा-विमर्श 2025

## दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

**हाइब्रिड कॉन्फ्रेंस**

***विषय:***

सीमा पार घुसपैठ: सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रभाव

**(Cross-Border Infiltration: Impact on Socio-economic, Cultural and Political Milieu)**

***तिथि:***

**21-22 अगस्त 2025**

**स्थल:**

**पहला दिन:**

कन्वेंशन हॉल, वाइस रीगल लॉज, नॉर्थ कैंपस

**पहला एवं दूसरा दिन:**

महर्षि कणाद भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय

**सांस्कृतिक संध्या व समापन:**

शंकर लाल ऑडिटोरियम, नॉर्थ कैंपस

संयुक्त तत्वावधान में

***आयोजक:***

**सीमा जागरण मंच, दिल्ली प्रदेश**

**मोतीलाल नेहरु कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय**

**सेंटर फॉर इंडिपेंडेंस एंड पार्टीशन स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय**

***प्रायोजक:***

**भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR)**

## उद्देश्य:

सीमा सुरक्षा अब केवल सैनिक मोर्चा नहीं, बल्कि पूरे समाज का साझा दायित्व बन गई है। भारत में अवैध घुसपैठ योजनाबद्ध प्रारूप से संचालित होती है। इससे विशेषकर सीमांत क्षेत्रों में जनजीवन तनावग्रस्त होता है, सांस्कृतिक स्वत्व का ह्रास होता है, और और राष्ट्रीय एकता धूमिल होती है। आंकड़े बताते हैं कि करोड़ों की संख्या में अवैध घुसपैठ हुए हैं ; ड्रग्स-नशाखोरी और साइबरक्राइम ने सुरक्षा ढाँचे को ध्वस्त किया है। सीमा-विमर्श 2025 की संगोष्ठी में ड्रोन, स्मार्ट-फेंस, एआई निगरानी और नीति-नवाचारों से समाधान की रूपरेखा खिंची गई, साथ ही शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय चेतना जागृत कर "सीमा-जागरूक परिवार" की कल्पना की गई। यह एक सशक्त सोच है जो भारत की अखंडता और गौरव को सुदृढ़ रख सकती है।

## उद्घाटन सत्र (21 अगस्त 2025, प्रातः 10 बजे)

**अध्यक्षता**: प्रो. योगेश सिंह (कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय)

**मुख्य अतिथि**: श्री आर. एन. रवि (माननीय राज्यपाल, तमिलनाडु)

**विशिष्ट अतिथि**: डॉ. जी. सतीश रेड्डी (पूर्व अध्यक्ष, DRDO)

**श्री आर.एन. रवि (राज्यपाल, तमिलनाडु) - मुख्य कथ्य -**

- बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ केवल संख्या का प्रश्न नहीं है; यह भारत की पहचान, उसके बुनियादी मूल्यों और उस जीवन-शक्ति को समाप्त करने का प्रयास है, जिसके आधार पर भारत का निर्माण हुआ है।
- भारत में विविधता है, लेकिन षड्यंत्रकारियों ने एक नैरेटिव रचकर उसे "विभिन्नता" में बदलने की कोशिश की है।
- भारत में हो रही घुसपैठ रोज़ी-रोटी के लिए नहीं, बल्कि यह रणनीतिक रूप से संगठित जनसंख्या-एकाग्रता (strategically engineered concentration) है। असम, बंगाल, बिहार और झारखंड में हो रही घुसपैठ भारत के एक और संभावित विभाजन की अग्रिम सूचना है। ये घुसपैठिए भारत की मुख्यधारा में घुलते-मिलते नहीं हैं, बल्कि हमेशा अलग संस्कृति की बात करते हैं। श्री रवि ने चेतावनी दी कि "यह भारत के विभाजन की तैयारी है - पार्ट टू ऑफ पार्टिशन। बाबा साहेब अंबेडकर ने आज़ादी से तीन साल पहले ही कह दिया था कि देश का विभाजन होगा।
- हमारी मान्यता है – "वसुधैव कुटुम्बकम्" (संपूर्ण विश्व एक परिवार है), लेकिन वे कहते हैं – "हम अलग हैं, काफ़िर के साथ नहीं रह सकते।"
- सीमा की सुरक्षा के लिए सीमा-जागरूकता परम आवश्यक है।
- श्री रवि ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के कार्यों की सराहना की, जिसने कठिन परिस्थितियों में स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण की सेवाएँ सीमांत क्षेत्रों तक पहुँचाईं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि सीमा जागरण मंच इसी भावना का प्रतीक है, जो सीमावर्ती जनता के साथ-साथ राष्ट्र की सीमाओं की सुरक्षा के लिए समर्पित है।

**डॉ. जी. सतीश रेड्डी (पूर्व अध्यक्ष, DRDO) - मुख्य कथ्य -**

- सम्माननीय अतिथि संबोधन में, डॉ. जी. सतीश रेड्डी, पूर्व अध्यक्ष, DRDO ने भारत की सीमाओं की रक्षा में स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी की केन्द्रीय भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने रडार इमेजिंग एवं फ्रीक्वेंसी-आधारित निगरानी के महत्व को रेखांकित करते हुए रेगिस्तान, पर्वतमालाएँ और समुद्री सीमाओं में इन प्रणालियों की तैनाती की चुनौतियों को स्वीकार किया। उन्होंने उल्लेख किया कि ऑपरेशन सिंदूर ने साबित कर दिया कि भारत ने वायु रक्षा में विश्वस्तरीय क्षमताएँ हासिल कर ली हैं, फिर भी घुसपैठ के खतरे बदल रहे हैं और निरंतर नवोन्मेष की माँग करते हैं। डॉ. रेड्डी ने देश के शोधकर्ताओं और तकनीशियनों से आह्वान किया कि वे रक्षा में आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भरता) के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दृढ़ करें, ताकि भारत की सुरक्षा अपनी शक्ति और प्रतिभा पर आधारित हो।
- विशेष रूप से उन्होंने सीमा से लगे गाँवों की भूमिका पर बल दिया और कहा कि ये गाँव देश की पहली रक्षा पंक्ति हैं। इन समुदायों को संचार, सुरक्षा प्रणाली और सामाजिक-आर्थिक सशक्त बनाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि रडार-संवेदनशील सीमा क्षेत्रों के पास रहने वाले 30,000 से अधिक किसान निगरानी और सुरक्षा प्रयासों में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। इस दृष्टि से गाँव ही राष्ट्र के लिए "वास्तविक बाड़बंदी" का कार्य करते हैं।

**प्रो. योगेश सिंह (कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय) - मुख्य कथ्य -**

- दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. योगेश सिंह** ने *पुलवामा से उरी* तक भारत की अडिग संकल्पशक्ति को याद किया। उन्होंने कहा कि अतीत के बोझ - जैसे *अन्यायपूर्ण सिंधु जल संधि* - जिसके तहत 80% जल पाकिस्तान को दे दिया गया - अब भी राष्ट्र पर भारी हैं। ऐसे निर्णय समझौते और अधीनता की मानसिकता को दर्शाते हैं, जिनकी *नए भारत* में कोई जगह नहीं।
- प्रो. सिंह ने कहा कि दिल्ली विश्वविध्यालय ने इकबाल को पढ़ाना बन्द कर दिया है। उदाहरण से उन्होंने समझाया कि कैसे "सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा" लिखने

वाले व्यक्ति ने बाद में " चीन-ओ-अरब हमारा हिन्दोस्ताँ हमारा, मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहाँ हमारा" लिखा, और " सिजदा न करूँ हिन्द की नापाक जमीं पर " जैसी बातें कहीं। उन्होंने प्रश्न उठाया कि "भारत के लोगों को, भारत के मन को यह बुरा क्यों नहीं लगा कि भारत के दुश्मन को पढ़ाया जाए"।

- आज भारत मज़बूती की स्थिति से बोलता है, जहाँ समझौता करना अब डिफ़ॉल्ट विकल्प नहीं है। उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा–"यह है नया भारत, बदलता हुआ भारत," जो एक गहरे सभ्यतागत परिवर्तन को दर्शाता है।

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अन्यान्य विषय -

1. विषय: सीमा पार घुसपैठ का दायरा और परिमाण: जनसांख्यिकी, मार्ग और पैटर्न विश्लेषण
2. विषय: सुरक्षा और राजनीतिक चुनौतियाँ: ध्रुवीकरण, जासूसी और चरमपंथी नेटवर्क
3. विषय: सीमा पार घुसपैठ की ऐतिहासिक प्रवृत्तियाँ: पैटर्न और उद्देश्य का विश्लेषण
4. विषय: मानसिक और सामाजिक प्रभाव: सीमा क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक तनाव
5. विषय: घुसपैठ के पर्यावरणीय प्रभाव: जंगल, वन्यजीव और जैव विविधता को नुकसान
6. विषय: सीमा क्षेत्रों में दुष्चक्र: घुसपैठिए, समर्थक और संगठित अपराध — कारक तत्व
7. विषय: सीमा पार घुसपैठ के आपराधिक आयाम: नशीले पदार्थ, हथियार और मानव तस्करी का गठजोड़
8. विषय: घुसपैठ और विधिक ढाँचा: AFSPA, NRC और CAA बहसों का पुनर्विचार
9. विषय: सीमा प्रबंधन में नीतिगत नवाचार: प्रौद्योगिकी और सहयोगात्मक ढाँचे का उपयोग कर सुदृढ़ सुरक्षा

10. विषय: घुसपैठ के सामाजिक-आर्थिक परिणाम: संसाधनों पर दबाव, रोजगार विस्थापन और आजीविका की चुनौतियाँ
11. विषय: प्रभावित संवेदनशील आबादी: अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के जोखिम; कल्याणकारी नीतियों के प्रभाव: पहुँच, दुरुपयोग और योजनाओं का बोझ
12. विषय: स्वदेशी दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा राष्ट्रत्व की व्याख्या
13. विषय: सांस्कृतिक परिणाम: पहचान का संकट, सामाजिक तनाव और विरासत से अलगाव
14. विषय: थल, वायु और समुद्री सीमा सुरक्षा में तकनीक: ड्रोन, स्मार्ट फेंस और कृत्रिम बुद्धिमत्ता निगरानी
15. विषय: स्वदेशी दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा राष्ट्रत्व
16. विषय: सीमा पार घुसपैठ की ऐतिहासिक प्रवृत्तियाँ: पैटर्न और उद्देश्य का विश्लेषण
17. विषय: सांस्कृतिक परिणाम: पहचान का संकट, सामाजिक तनाव और विरासत से अलगाव
18. विषय 1: सीमा पार घुसपैठ के आपराधिक आयाम: नशीले पदार्थ, हथियार और मानव तस्करी का गठजोड़
19. विषय 2: घुसपैठ और विधिक ढाँचे: AFSPA, NRC और CAA बहसों का पुनरीक्षण
20. विषय: भूमि, वायु और समुद्री सीमा सुरक्षा में तकनीक: ड्रोन, स्मार्ट फेंस और AI निगरानी
21. विषय: सुरक्षा और राजनीतिक चुनौतियाँ: ध्रुवीकरण, जासूसी और चरमपंथी नेटवर्क
22. विषय: घुसपैठ का संवेदनशील आबादी पर प्रभाव: सीमा क्षेत्रों में दलित, आदिवासी और महिलाओं के जोखिम
23. विषय: सीमा प्रबंधन में नीतिगत नवाचार: प्रौद्योगिकी और सहयोगात्मक ढाँचे का उपयोग कर सुदृढ़ सुरक्षा
24. विषय: सीमा पार घुसपैठ: नवीन दृष्टिकोण, तुलनात्मक केस अध्ययन और अंतःविषय परिप्रेक्ष्य
25. विषय 1: सीमा पार घुसपैठ के आपराधिक आयाम: नशीले पदार्थ, हथियार और मानव तस्करी का गठजोड़
26. विषय 2: घुसपैठ और विधिक ढाँचा: राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में AFSPA, NRC और CAA का पुनर्विचार
27. विषय: सांस्कृतिक परिणाम: पहचान का संकट, सामाजिक तनाव और विरासत से अलगाव
28. विषय: सीमा एवं समुद्री सुरक्षा में प्रौद्योगिकीय सीमाएँ: ड्रोन, स्मार्ट फेंस और AI निगरानी
29. विषय: सीमा प्रबंधन में नीतिगत नवाचार: प्रौद्योगिकी और सहयोगात्मक ढाँचे का उपयोग कर सुदृढ़ सुरक्षा
30. विषय 1: घुसपैठ के पर्यावरणीय प्रभाव: जंगल, वन्यजीव और जैव विविधता को नुकसान

31. विषय 2: घुसपैठ का संवेदनशील आबादी पर प्रभाव: अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं पर खतरे
32. विषय: सीमा पार घुसपैठ का दायरा और परिमाण: जनसांख्यिकी, मार्ग और पैटर्न विश्लेषण
33. विषय 1: स्वदेशी दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा राष्ट्रत्व
34. विषय 2: सीमा पार घुसपैठ की ऐतिहासिक प्रवृत्तियाँ: पैटर्न और उद्देश्य का विश्लेषण
35. विषय 3: घुसपैठ के सामाजिक-आर्थिक परिणाम: संसाधनों पर दबाव, रोजगार विस्थापन और आजीविका चुनौतियाँ
36. विषय: सीमा पार घुसपैठ: नवीन दृष्टिकोण, तुलनात्मक केस अध्ययन और अंतःविषय अंतर्दृष्टियाँ

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उल्लेख्य अंश

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सत्र

1. **उद्घाटन सत्र**
2. **पूर्ण सत्र (Plenary Session)** - 2

**पूर्ण सत्र 1. विषय:** ***"सीमा पार घुसपैठः सुरक्षा चुनौतियाँ, सामाजिक प्रभाव और सीमावर्ती समुदायों की भूमिका"***

अध्यक्ष: प्रो. श्रीप्रकाश सिंह, कुलपति, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय

सह-अध्यक्ष: प्रो. प्रभाशंकर शुक्ल, कुलपति, नार्थ-इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी

**वक्ता:**

**श्री रूवेन अजार,** इसराइल के भारत में राजदूत

**श्री अशोक कुमार, पूर्व** डीजीपी, उत्तराखंड, एवं कुलपति, हरियाणा स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी

**ले. जनरल विष्णु कांत चतुर्वेदी**, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद्

इस सत्र में अशोक कुमार, पूर्व DGP, उत्तराखंड ने कहा –

- ✓ पाकिस्तान के जनरल मुशर्रफ़ ने अपने अंतिम दिनों में कहा था – "हम इंडिया को बुलेट से नहीं, बैलेट के बल पर जीतेंगे।"
- ✓ घुसपैठियों को आर्थिक मदद ड्रग्स स्मगलिंग के पैसे और साइबर क्राइम से मिलती है।
- ✓ भारत में लगभग चार से पाँच करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं। अगर इन्हें बाहर निकाला जाए तो हमारे देश के ग़रीबों की दिहाड़ी और मासिक मज़दूरी डेढ़ से दो गुनी हो जाएगी।
- ✓ पाकिस्तान के घुसपैठियों का स्वागत जैसे गोलियों से किया जाता है, वैसा ही स्वागत बांग्लादेशी घुसपैठियों का भी होना चाहिए।

**पूर्ण सत्र 2. विषय: "*स्थलीय सीमाएँ और प्रशासनिक कमजोरी: पूर्वोत्तर और तिब्बती सीमा में घुसपैठ और प्रतिरोध*"**

**अध्यक्ष: प्रो. संजय श्रीवास्तव**, कुलपति, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी

**प्रो. डॉ. डब्ल्यू. चंद्रबाबू सिंह**, कुलपति, धानामंजुरी विश्वविद्यालय (DMU), मणिपुर

***सह-अध्यक्ष: प्रो. बिन्ध्य वासिनी पाण्डेय***, निदेशक, हिमालय अध्ययन केन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

**वक्ता:**

**श्री अश्विनी उपाध्याय**, वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, भारत

**ले. जनरल राणा प्रताप कालिता**

**डॉ. प्रमोद जायसवाल**, रिसर्च डायरेक्टर, NIICE, नेपाल

## ii. विषयगत सत्र (Thematic Session) - 3

**विषयगत सत्र - 1**

**विषय - "पंजाब, खालिस्तान और सीमा पार आतंकवाद"**

**अध्यक्ष - प्रो. रमाशंकर दूबे, कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात**
**सह-अध्यक्ष - प्रो. जगमीत सिंह, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पंजाब**
**मुख्य व्याख्यान - ले. जनरल के. जे. सिंह**

**विषयगत सत्र - 2**

**विषय - "रेड कॉरिडोर व अदृश्य सीमाएँ"**

**अध्यक्ष - प्रो. एस.के. नायक, कुलपति, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश**

**श्री डी.एम. अवस्थी, पूर्व डीजीपी, चंडीगढ़**

**प्रो. कपिल कुमार, प्रसिद्ध इतिहासकार, इग्नू**

**विषयगत सत्र - 3**

**विषय - समुद्री सीमाओं की सुरक्षा**

**अध्यक्षता - कैप्टन आलोक बंसल**

**वक्ता -**

**प्रो. एस.के. नायक, कुलपति, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश**

**वाइस एडमिरल अजेंद्र बहादुर सिंह**

**प्रो. एस.आर. निरंजन**

**जापान के प्रो. तोमोहीको तनिगुची**

## शोधपत्र प्रस्तुतियाँ एवं प्रतिभागी-सहभागी

| | |
|---|---|
| सत्रों की कुल संख्या | 31 |
| उद्घाटन सत्र | 01 |
| पूर्ण (Plenary) सत्रों की कुल संख्या | 02 |
| विषयगत (Thematic) सत्रों की कुल संख्या | 03 |
| तकनीकी (Technical) सत्रों की कुल संख्या | 23 |
| ऑफ़लाइन | 15 |
| ऑनलाइन | 08 |
| सांस्कृतिक सत्र | 01 |
| समापन (Valedictory) सत्र | 01 |
| उद्घाटन सत्र में अतिथि + प्रतिभागियों की कुल संख्या | 650+ |
| समापन सत्र में अतिथि + प्रतिभागियों की कुल संख्या | 500+ |
| ऑफ़लाइन शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं की कुल संख्या | 114 |
| ऑनलाइन शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं की कुल संख्या | 61 |
| भारत के राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों से प्रतिनिधित्व | 26 |

ध्यातव्य - ये प्रस्तुतियाँ भारत और विदेश के विद्वानों, शोधकर्ताओं और अध्यवसायियों द्वारा दी गईं।

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के मुख्य विषयगत क्षेत्र -

**सम्मेलन में व्यापक स्पेक्ट्रम के मुद्दों पर चर्चा हुई जिनमें निम्नलिखित प्रमुख थे:**

- ✓ ऐतिहासिक और समसामयिक पहलू
- ✓ सीमा पार घुसपैठ के ऐतिहासिक पैटर्न
- ✓ शासन और सुरक्षा में समसामयिक चुनौतियां
- ✓ प्रमुख विषयगत क्षेत्र
- ✓ घुसपैठ का दायरा और परिमाण
- ✓ जनसांख्यिकीय बदलाव
- ✓ घुसपैठ के रास्ते

## तकनीकी समाधान

**उन्नत तकनीकों की भूमिका पर व्यापक चर्चा हुई:**

- ✓ ड्रोन तकनीक
- ✓ स्मार्ट फेंसिंग
- ✓ AI-संचालित निगरानी प्रणाली
- ✓ भू-स्थानिक निगरानी

**इन तकनीकों का स्थलीय, वायु और समुद्री सीमा सुरक्षा को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान माना गया।**

## नीतिगत सत्र

- ✓ नीति-उन्मुख सत्रों में निम्नलिखित पर केंद्रित चर्चा हुई:
- ✓ बहुपक्षीय और द्विपक्षीय सहयोग
- ✓ खुफिया और डेटा साझाकरण
- ✓ सीमावर्ती विकास पहल
- ✓ भारत की रणनीतिक स्थिति के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून और कूटनीति के निहितार्थ

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की सांस्कृतिक संध्या

पहले दिन की शाम को शंकर लाल ऑडिटोरियम की सांझ में, दीप की शीतल लौ-सी एक गरिमा उतरी और केन्द्रीय पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत की उपस्थिति ने उसे विनयपूर्ण औचित्य दे दिया — जैसे सम्मान का एक शांत आलोक मंच पर ठहर गया हो। मोतीलाल नेहरू कॉलेज (सांध्य) के विद्यार्थियों ने विविध प्रांतों की लोक-कला, वेश-भूषा और सुर-ताल में भारत के मानचित्र को नई लिपि दी — जहाँ भिन्न रंग मिलकर एक ही आंचल बनते हैं, और नृत्य-गीत अपनी थिरकन से कह देते हैं कि एकता का स्वर सबसे मधुर होता है। उस क्षण सभागार मात्र स्थल न रहा — वह घर बन गया, जहाँ देश ने अपने अनेक रूपों में स्वयं को पहचानकर मन ही मन मुस्कुरा दिया।

## समापन समारोह (वैलिडिक्ट्री सेशन)

समापन सत्र संकल्प का सत्र रहा — जहाँ औपचारिक वाक्य नहीं, उत्तरदायित्व का स्वर प्रमुख था। सभी गणमान्य अतिथियों, वक्ताओं, शोधपत्र प्रस्तुतकर्ताओं, प्रतिनिधियों, स्वयंसेवकों और

सहयोगी संस्थानों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यह स्पष्ट किया गया कि सीमा-सुरक्षा किसी एक नाम के श्रेय से संभव नहीं, यह देशवासियों के सामूहिक समर्पण, देशभक्ति और जागरुकता का प्रतिफल होता है।

## वक्ताओं के मुख्य कथ्य -

## श्री किरण रिजिजु, (केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार), मुख्य अतिथि

- ✓ **सीमावर्ती यथार्थ की समझ:** नीतिनिर्माण में सीमा-प्रदेशों की वास्तविक चुनौतियों की प्रत्यक्ष समझ अनिवार्य है; दूर-दराज़ के अनुभव के बिना निर्णय त्रुटिपूर्ण होते हैं।
- ✓ **स्पष्ट सीमा नीति की आवश्यकता:** 2014 से पहले ठोस सीमा नीति के अभाव के दुष्परिणाम दिखे; अब नीति-संचालित दृष्टि से समन्वित सुरक्षा और विकास दोनों पर जोर है।
- ✓ **अवसंरचना में क्रांतिकारी सुधार:** सड़क, संचार, ऊर्जा और बुनियादी सेवाएँ तेज़ी से सीमा तक पहुँचीं; "वाइब्रेंट विलेज" दृष्टिकोण ने "आखिरी गाँव" को "पहला गाँव" मानकर केंद्र में रखा।
- ✓ **स्थानीय पहल का महत्व:** तवांग और विजयनगर जैसे उदाहरण दिखाते हैं कि स्थानीय नेतृत्व, सामरिक साहस और त्वरित कार्रवाई राष्ट्रीय हितों की रक्षा में निर्णायक हो सकते हैं।

- ✓ **समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा:** राष्ट्र-रक्षा सर्वोपरि धर्म है — यह केवल सेना का नहीं, प्रत्येक नागरिक, समाज और शासन का संयुक्त दायित्व है; वोट-बैंक राजनीति, दुष्प्रचार और राष्ट्रीय हित से समझौता भविष्य को संकट में डालते हैं।

## श्री मुरलीधर भिंडा, राष्ट्रीय प्रमुख, सीमा जागरण मंच

- ✓ **सीमा सुरक्षा जन-भागीदारी:** सेना-अर्धसैनिक बलों के साथ नागरिक समाज की संगठित भागीदारी को "हर नागरिक का परम कर्तव्य" के रूप में स्थापित किया जाए।
- ✓ **शैक्षिक जागरण**: शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन को बढ़ावा देकर युवाओं में सीमापार चुनौतियों की वास्तविक समझ और देशभक्ति चेतना विकसित की जाए।
- ✓ **सीमा अवसंरचना:** हर सीमा-द्वार और गाँव तक सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएँ पहुँचाकर स्थानीय समुदायों को आत्मनिर्भर और राष्ट्राभिमानी बनाया जाए।
- ✓ **विश्वास का सेतु:** सीमावासी नागरिकों और सुरक्षा एजेंसियों के बीच नियमित संवाद, साझा गतिविधियाँ और पारदर्शी समन्वय से "सहयोगी समाज" मॉडल सुदृढ़ किया जाए।
- ✓ **मातृभूमि भाव:** सीमा-भूमि को "मातृभूमि की रक्षा" का पवित्र दायित्व मानते हुए नागरिक कर्तव्यों को जीवन-व्यवहार का संस्कार बनाया जाए।

## प्रो. धनंजय सिंह, (सदस्य सचिव, आईसीएसएसआर), वक्ता

- ✓ **अवैध प्रवासन और जनसांख्यिकी:** 1947 के बाद से निरंतर अवैध प्रवासन सार्वजनिक नीति का केंद्रीय विषय बने; नागरिकता का अनुचित विस्तार स्थानीय जनाधिकार, संस्कृति और सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- ✓ **संगठित अपराध और सीमा-चुनौती:** नारकोटिक्स ट्रायंगल सहित अंतरराष्ट्रीय अपराध नेटवर्क नशीले पदार्थ, मानव तस्करी और संगठित अपराध के जरिए राष्ट्रीय सुरक्षा को व्यवस्थित चुनौती देते हैं।
- ✓ **प्रमाणाधारित नीति-निर्माण:** अनुभवजन्य शोध, स्थानीय अध्ययनों और वास्तविक डेटा पर आधारित, क्षेत्र-विशिष्ट नीतियाँ ही प्रभावी समाधान दे सकती हैं; शैक्षणिक संस्थाओं की अग्रणी भूमिका आवश्यक है।

## प्रो. श्री प्रकाश सिंह, (कुलपति, हेमवतीनंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय), वक्ता

**शैक्षणिक अनिवार्यता और सहयोग:** विश्वविद्यालयों में सीमा सुरक्षा पर चर्चा, निरीक्षण और पाठ्येतर गतिविधियाँ अनिवार्य हों; सेना–अकादमिक साझेदारी (जैसे गढ़वाल राइफल्स के साथ डिप्लोमा, अंतरराष्ट्रीय सेमिनार) के माध्यम से छात्रों की व्यावहारिक समझ और राष्ट्रीय संकल्प सुदृढ़ करने की पहल की है।

**संसाधन-साझाकरण और दीर्घकालीन विस्तार:** शोध-संसाधनों का अंतर-विश्वविद्यालयी साझा उपयोग कर सीमा सुरक्षा अध्ययन को गति दी जाए, ताकि "सीमा विमर्श" जैसे मंच देशभर के विश्वविद्यालयों तक फैलें और टिकाऊ नीतिगत–सामाजिक प्रभाव उत्पन्न करें।

# अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में स्तुत्य सहभागिता

## केन्द्रीय मंत्री

1. श्री गजेंद्र सिंह, संस्कृति मंत्री, भारत सरकार {सांस्कृतिक संध्या}
2. श्री किरेन रिजिजू, संसदीय कार्य मंत्री, भारत सरकार {समापन सत्र}

## कुलपति

1. प्रो. योगेश सिंह — कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय
2. प्रो. रामाशंकर दूबे — कुलपति, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ गुजरात
3. प्रो. श्री प्रकाश सिंह — कुलपति, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय
4. प्रो. प्रभा शंकर शुक्ला — कुलपति, नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी
5. प्रो. संजय श्रीवास्तव — कुलपति, महात्मा गांधी सेंट्रल यूनिवर्सिटी, मोतिहारी
6. प्रो. संजीव जैन — कुलपति, सेंट्रल यूनिवर्सिटी जम्मू
7. प्रो. एस.के. नायक — कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय
8. प्रो. डॉ. डब्ल्यू. चंद्रबाबु सिंह — कुलपति, डीएमयू, मणिपुर

## वैज्ञानिक

1. डॉ. जी. सतीश रेड्डी — पूर्व अध्यक्ष, डीआरडीओ

2. डॉ. श्रीधर पनिक्कर सोमनाथ — पूर्व अध्यक्ष, इस्रो

## पुलिस महानिदेशक

1. श्री अशोक कुमार — पूर्व डीजीपी, उत्तराखंड
2. श्री डी.एम. अवस्थी — पूर्व डीजीपी, छत्तीसगढ़

## शैक्षणिक संस्थानादि के निदेशक

1. प्रो. बिन्ध्य वासिनी पांडेय — निदेशक, हिमालय अध्ययन संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय
2. डॉ. प्रमोद जायसवाल — शोध निदेशक, एनआईआईसीई, नेपाल
3. प्रो. पुष्प कुमार — निदेशक, आईएलसी, फैकल्टी ऑफ़ लॉ, दिल्ली विश्वविद्यालय
4. कैप्टन आलोक बंसल — निदेशक, इंडिया फ़ाउंडेशन

## ख्यातलब्ध अधिवक्ता

1. श्री अश्विनी उपाध्याय — अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, भारत

## परमादृत प्राध्यापक

1. प्रो. बालाराम पाणि — डीन ऑफ़ कॉलेजेज़, दिल्ली विश्वविद्यालय
2. प्रो. मनीष — डीन, एसआईएस, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ गुजरात
3. प्रो. प्रणव कुमार — डीन, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ बिहार
4. प्रो. नबाम नाखा हीना — डीन, छात्र कल्याण, राजीव गांधी विश्वविद्यालय
5. प्रो. तोमोहिको तनिगुची — प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ त्सुकुबा, जापान
6. प्रो. रेखा सक्सेना — अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
7. प्रो. राधेश्याम शर्मा — अध्यक्ष, पर्यावरणीय अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
8. प्रो. कपिल कुमार — वरिष्ठ फ़ैलो, एनएमएमएल, नई दिल्ली
9. प्रो. सुरेश चंद राय — पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

**10.** प्रो. उमेश अशोक कदम — जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

**11.** प्रो. डॉ. गौरी शंकर कलोया — एम्स, नई दिल्ली

**12.** प्रो. जगमीत सिंह — सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ पंजाब

**13.** प्रो. शांतिश कुमार सिंह — सीआईपीओडी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

**14.** प्रो. एम. वेंकटरामन — प्रोफेसर, SNSS, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू

**15.** प्रो. सतीश कुमार — राजनीति विज्ञान विभाग, इग्नू

**16.** प्रो. विवेक कुमार निगम — अर्थशास्त्र विभाग, ईविंग क्रिश्चियन कॉलेज, उत्तर प्रदेश

**17.** डॉ. एस.आर. निरंजन — सदस्य, डीएसएस-कमेटी, यूजीसी

## संस्तुत्य सेनाधिकारी

**1.** लेफ्टिनेंट जनरल विष्णु कांत चतुर्वेदी

**2.** लेफ्टिनेंट जनरल (डॉ.) के. हिमालय सिंह

**3.** लेफ्टिनेंट जनरल राणा प्रताप कालिता

**4.** लेफ्टिनेंट जनरल के.जे. सिंह

**5.** लेफ्टिनेंट जनरल अरुण साहनी

**6.** लेफ्टिनेंट जनरल सुनील श्रीवास्तव

**7.** लेफ्टिनेंट जनरल अजय सिंह

**8.** लेफ्टिनेंट जनरल विनोद भाटिया

**9.** वाइस एडमिरल अजेन्द्र बहादुर सिंह

**10.** लेफ्टिनेंट कर्नल (डॉ.) लव तोमर

**11.** मेजर जनरल प्रवीन कुमार

**12.** ग्रुप कैप्टन राजेश कुमार सिंह

# प्रमुख निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

- ✓ समावेशी राष्ट्रीय चेतना: "सीमा रक्षा प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य" धारणा को शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
- ✓ स्वदेशी व सांस्कृतिक समावेश: सीमावर्ती समुदायों में स्वदेशी दर्शन व भारत दर्शन का समावेश बढ़ाया जाए।
- ✓ टेक्नोलॉजी इंटीग्रेशन: ड्रोन, एआई निगरानी, भू-स्थानिक मॉनिटरिंग को 2026–28 तक चरणबद्ध लागू करें।
- ✓ नीति नवाचार: बहुपक्षीय समझौते, द्विपक्षीय डेटा साझाकरण, सीमावर्ती विकास मॉडल प्रारंभ।
- ✓ विश्वविद्यालय-उद्योग-सरकार सहयोग: शोध व प्रायोगिक परियोजनाओं के लिए स्थायी मंच स्थापित करें।

## 2026–2028 रोडमैप:

- ✓ चरण 1: "स्मार्ट बॉर्डर" पायलट प्रोजेक्ट—4 संवेदनशील सेक्टर
- ✓ चरण 2: ग्रामीण स्तर पर "पहला गाँव" सशक्तिकरण योजना
- ✓ चरण 3: डेटा-शेयरिंग क्लाउड प्लैटफॉर्म व कानून-व्यवस्था कॉरिडोर

## आग्रगामी संकल्प:

- ✓ राष्ट्रीय सुरक्षा को "सभी का साझा अभियान" बनाना
- ✓ सीमावर्ती विकास व आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता
- ✓ तकनीकी व नीति नवाचार के साथ "एक भारत—अखंड भारत" की रक्षा

# जयहिन्द